नैतिक मूल्य

INNOVATION CODE - JHK/18/06

अक्सर प्रश्न उठता है कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है? क्या शिक्षा का उद्देश्य केवल लिखना, पढ़ना सीखना है, या फिर नौकरी/व्यवसाय करने के योग्य बनना है, या फिर धन अर्जित करना है? सच्ची और वास्तविक शिक्षा का उद्देश्य इन सभी ध्येयों से कहीं बढ़कर और ऊपर है। शिक्षा हमें अर्जित किए गए ज्ञान का सदुपयोग करना सिखाती है। सही–गलत परिस्थितियों का आंकलन करके सच्चाई और नेकी की राह पर चलने का साहस देती है। हम सभी के भीतर जन्म से नैतिक मूल्य और अच्छाइयां होती हैं। लेकिन बीतती आयु के साथ अक्सर हम इन गुणों का विकास करने की बजाए, उन्हें परिस्थितियों के आगे झुका देते हैं। यदि छात्रों को बाल्य अवस्था से ही नैतिक मूल्यों के महत्व से अवगत कराया जाए और उनके इन गुणों का विकास किया जाए, तो वह जीवन में सत्य, संवेदनशीलता, सदाचार और संतोष के मार्ग पर चलते रहेंगे, व्यस्क हो सजग नागरिक बनेंगे। इन्हीं सुविचारों को केंद्र में रखते हुए नैतिक मूल्य नवाचार को विकसित किया गया है।

नवाचारी शिक्षकों के नाम

1. बीरेन्द्र प्रसाद, उत्क्रमित मध्य विद्यालय आजाद नगर, बोकारो
2. ज्योतसना कुमारी, उत्क्रमित उच्च विद्यालय तरनी, जमतारा
3. जय प्रकाश रजक, राजकीयकृत मध्य विद्यालय, चतपरा
4. तरूण कुमार सिंह, उत्क्रमित उच्च विद्यालय अरुवान, कुचई, सरायकेला खरसावन

नवाचार के लाभ

- यह नवाचार उनके सजग और सफल नागरिक बनने की नींव मजबूत करता है।
- छात्रों में दायित्व बोध का विकास होता है, आत्मविश्वास और सहयोग भाव बढ़ता है।
- वे 'सम्मान' और 'समानुभूति' की परिभाषा समझने लगते हैं, जिससे वह संवेदनशील बनते हैं।
- छात्रों के सकारात्मक कार्यों को देखकर समुदाय और अभिभावकों का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण भी बदलता है। उनके भीतर भी विद्यालय के प्रति लगाव बढ़ता है।

प्रभाव क्षेत्र — छात्रों, शिक्षकों और समुदाय में नैतिक मूल्यों का संचार, विद्यालय में अभिभावकों/सामुदायिक सहभागिता में वृद्धि

नवाचार का सार

इस नवाचार में दी गयी प्रत्येक गतिविधि विशिष्ट नैतिक मूल्यों पर केंद्रित है। इन सभी में समुदाय की अहम भूमिका है। विद्यालय के साथ जुड़ने का सकारात्मक प्रभाव छात्रों के परिवार और स्थानीय समुदाय पर पड़ता है, और विद्यालय के महत्व को बल मिलता है। साथ ही कई शैक्षिक समस्याएं जैसे कि कम नामांकन दर, कक्षा अनुपस्थिति, गृह कार्य न करने जैसी परेशानियां दूर होती हैं।

विभिन्न गतिविधियां

1.नैतिकता के स्काउट और गाइड

संक्षिप्त परिचयः जिस प्रकार एन.सी.सी (राष्ट्रीय कैडेट कोर) में छात्र और छात्राओं को सफल कार्य करने पर बैच यानि तमगा दिया जाता है, वैसे ही इस गतिविधि में छात्र–छात्राओं को दूसरों की मदद करने पर तमगा दिया जाता है। इस गतिविधि के माध्यम से छात्रों में समानुभूति और दया की भावना का सृजन किया जाता है। छात्रों को प्रेरित किया जाता है कि वह अपने सहपाठी, परिवार के सदस्यों और आस–पड़ोस की मदद करें। इसके लिए उन्हें कोई जोखिम भरे या कठिन कार्य करने की आवश्यकता नहीं है। सरल और सहज कार्यों के द्वारा भी वह दूसरों की मदद कर सकते हैं। शिक्षक सहायता करने के लिए कार्यों को विभिन्न श्रेणियों में बांट सकते हैं और हर श्रेणी के लिए किसी खास रंग का तमगा निर्धारित कर सकते हैं। शिक्षक छात्रों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे सभी श्रेणियों के तमगे एकत्रित करें।

विद्यालय / कक्षा में संप्रयोगः इस गतिविधि से छात्रों में आत्मविश्वास के साथ सामान्य ज्ञान भी बढ़ता है। उनके भीतर तथ्यों को समझने की ललक पैदा होती है एवं विभिन्न विषयों के प्रति जिज्ञासु बनते हैं।

योजनाः योजना के अंतर्गत शिक्षक सर्वप्रथम छात्रों को दूसरों की सहायता करने का महत्व समझाते हैं। वह समानुभूति और सहानुभूति का अंतर भी स्पष्ट कर सकते हैं। सहानुभूति में जहां केवल दया का भाव होता है, लेकिन कोई क्रिया– प्रतिक्रिया नहीं होती। वहीं समानुभूति में दया और सम्मान के साथ प्रतिक्रिया या क्रिया भी होती है।

विधिः छात्रों को एक कॉपी बनाने के लिए कहा जाता है। इस कॉपी में छात्र सहायता करने की तिथि, सहायता का विवरण और जिस व्यक्ति की सहायता की गई उसका नाम और अन्य जानकारियां लिखते हैं।

साथ ही, छात्र शिक्षक द्वारा निर्धारित श्रेणियों के आधार पर अलग–अलग रंग के तमगे बना सकते हैं। इन्हें बनाने के लिए शिक्षक और छात्र अपनी रचनात्मकता दिखा सकते हैं। वह चाहें तो अलग अलग रंग/आकार के गत्ते के बैच या फिर रिबन का उपयोग भी कर सकते हैं।

क्रियान्वयनः

- क्रियान्वयन के लिए शिक्षक छात्रों को श्रेणियों के बारे में उदाहरण के साथ विस्तार से समझा सकते हैं। जैसे कि–

–पहला उदाहरण– घर के काम (जैसे कि साफ–सफाई, पशुओं को चारा डालना, पानी भरना इत्यादि) में माता–पिता की सहायता करने पर छात्रों को पीले रंग का तमगा मिलेगा।

–दूसरा उदाहरण– पढ़ाई में कमजोर अपने सहपाठी / भाई–बहन या आस–पड़ोस के बच्चों की मदद करने पर नीले रंग के तमगे से छात्र को सम्मानित किया जाएगा।

–तीसरा उदाहरण– सड़क पर किसी वृद्ध या मजबूर व्यक्ति की मदद करने में छात्र को हरे रंग का तमगा मिलेगा।

- छात्रों को प्रतिदिन अपनी कॉपी में सहायता कार्य का विवरण लिखने के लिए कहा जाएगा। सप्ताह के अंत में शिक्षक छात्रों के विवरण की समीक्षा करके उन्हें तमगे भेंट करेंगे। यदि शिक्षक को छात्र के द्वारा लिखे गए विवरण पर किसी प्रकार की शंका होती है, तो वह अपने विवेक का इस्तेमाल करते हुए छात्र से घटना संबंधी प्रश्नोत्तर कर सकते हैं।
- महीने के अंत में जिस छात्र के पास सर्वाधिक अलग–अलग श्रेणियों के तमगे एकत्रित होंगे, उन्हें तालियों के साथ कक्षा में सम्मानित किया जाएगा।
- इस गतिविधि का क्रियान्वयन कक्षा में पढ़ाए जा रहे विषय से जोड़कर भी किया जा सकता है। जैसे कि– यदि शिक्षक छात्रों को मच्छरों से होने वाली बीमारियों या फिर

स्वच्छता पर पाठ पढ़ा रहे हैं, तो वह छात्रों से घर–परिवार में ऐसे सहायक कार्य करने के लिए कह सकते है जिससे वातावरण स्वच्छ हो और बीमारियां न फैंले।

ध्यान दें: इस गतिविधि का विस्तार विद्यालय अपनी रुचि और छात्र संख्या के आधार पर कर सकते हैं। शिक्षकगण चाहें तो सर्वाधिक सहायता करने वाले छात्र और उनकी सहायता से लाभान्वित हुए व्यक्तियों को किसी आयोजन में सम्मानित भी कर सकते हैं।

2. दादा–दादी और नाना–नानी की कहानियां

संक्षिप्त परिचय: सदियों से किस्से–कहानियां सुनना–सुनाना हमारी परंपरा का हिस्सा रहा है। परिवारों में अक्सर बड़े–बुजुर्ग बच्चों को राजा–रानी से लेकर शेर–चूहे की कहानियां सुनाते हैं। इन कहानियों का बाल मन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। इसी सोच के साथ 'दादा–दादी और नाना–नानी की कहानियां' गतिविधि को विकसित किया गया है। जिसमें छात्रों के दादा–दादी और नाना–नानी को कक्षा में कहानी सुनाने के लिए आमंत्रित किया जाता है और वह पंचतंत्र, जातक या पौराणिक कहानियां बच्चों को सुनाकर छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास करते हैं। इससे वह कहानियों के द्वारा साहस, सत्यता, एकता, लालच नहीं करने जैसे मूल्य छात्रों में जगा सकते हैं।

विद्यालय कक्षा में संप्रयोग: कहानियां सुनने से छात्रों की कल्पना शक्ति, मौखिक अभिव्यक्ति और भाषा में सुधार होता है। विद्यालय में सकारात्मक वातावरण बनता है।

योजना/विधि: जिन छात्रों के दादा–दादी या नाना–नानी कक्षा में कहानी सुनाने में रुचि रखते हों, उनकी एक सूची तैयार की जाती है। कहानी सुनाने के लिए जिस छात्र के दादा–दादी या नाना–नानी पर सहमति बनती है, उन्हें शिक्षक संपर्क करके विद्यालय में आमंत्रित करते हैं। आमंत्रित दादा–दादी या नाना–नानी को फूलों/कला–शिल्प भेंट करके आभार व्यक्त किया जाता है।

क्रियान्यवन–विभिन्न नैतिक मूल्यों पर अनेकों दिलचस्प कहानियां हो सकती हैं।

- शिक्षक किसी एक नैतिक मूल्य को केंद्र में रखकर छात्रों के दादा–दादी या नाना–नानी से कहानी सुनाने का निवेदन कर सकते हैं। कहानी सुनाने के उपरांत दादा–दादी या नाना–नानी को छात्रों द्वारा बनाए कला–शिल्प से सम्मानित किया जा सकता है।
- शिक्षक छात्रों से कहानी से संबंधित प्रश्न या फिर शब्दार्थ, पर्यायवाची, विलोम शब्द भी पूछ सकते हैं। जिससे छात्रों की आंकलन करने की क्षमता और भाषा बोध बढ़ता है।

ध्यान दें: यह गतिविधि सप्ताह में किसी एक दिन क्रियान्वित की जा सकती है। शिक्षक चाहें तो यह गतिविधि विद्यालय स्तर पर भी आयोजित कर सकते हैं, और इसमें समुदाय के अन्य सदस्यों/अभिभावकों को भी आमंत्रित कर सकते हैं।

3. पर्वों से पर्यावरण संरक्षण

संक्षिप्त परिचयः हमारे देश में मनाए जाने वाले प्रत्येक पर्व के साथ एक दायित्व बोध और संकल्प शक्ति जुड़ी है। जैसे कि रक्षा बंधन में भाई बहन की रक्षा करने का दायित्व उठाता है, दशहरा त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत का संकल्प सजीव करता है। इसी प्रकार ईद और क्रिसमस के साथ भी विशेष दायित्व बोध जुड़ा है। इन पर्वों को यदि पर्यावरण संरक्षण के साथ जोड़ दिया जाए, तो इससे छात्रों को पर्वों का महत्व समझ आएगा, और साथ ही वह पर्यावरण को बचाने के लिए सजग भी होंगे।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः पर्यावरण संरक्षण के माध्यम से छात्रों को विभिन्न विषय विस्तार से समझाए जा सकते हैं। जैसे वृक्षों का महत्व, पेड़–पौधों के नाम और उनके गुण, मिट्टी के प्रकार, वायु मंडल में विभन्न गैसों के प्रभाव–दुष्प्रभाव, प्लास्टिक से होनी वाली हानि, बीज से पौधे बनने तक की जैविक प्रक्रिया इत्यादि।

योजना/ विधिः शिक्षक इस गतिविधि की तैयारी पर्व आने से पूर्व ही कर सकते हैं। छात्रों को घर से छोटा पौधा लाने के लिए कहा जा सकता है। इस गतिविधि में वन विभाग और समुदाय की सहभागिता भी ली जा सकती है। समुदाय से पौधों, गमलों, खाद्, फावड़ा इत्यादि सामग्रियों और औजार विद्यालय को भेंट करने की अपील की जा सकती है। छात्र पेड़ों पर बांधने के लिए रंगीन धागे या रिबन तैयार कर सकते हैं।

क्रियान्वयनः पर्व वाले दिन या उससे एक दिन पहले समुदाय को विद्यालय में आमंत्रित किया जाता है। विस्तार से समझने के लिए रक्षा बंधन का त्यौहार उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है–

- शिक्षकगण समुदाय का स्वागत करते हैं और पर्व से किस प्रकार छात्रों के बीच दायित्व बोध विकसित किए जा सकता है, इस पर विचार प्रकट करते हैं।
- उसके बाद शिक्षक छात्रों और समुदाय का वृक्षारोपण में सहयोग देते हैं।
- छात्र पर्यावरण संरक्षण के लिए पेड़–पौधों के इर्द–गिर्द सुरक्षा बंधन यानि धागा बांधते हैं और पर्यावरण को बचाने का संकल्प भी लेते हैं। यह कार्य समुदाय के सदस्य भी कर सकते हैं।
- समुदाय द्वारा विद्यालय को भेंट किए गए सामान सभी के समक्ष प्रदर्शित किये जाते हैं।

ध्यान दें: विद्यालय अपने विवेकानुसार इस गतिविधि के क्रियान्वयन के लिए पर्व का चयन कर सकते हैं।

4. मातृ– पितृ सम्मान

संक्षिप्त परिचयः 'सम्मान' मनुष्य जीवन का एक मूलभूत नैतिक मूल्य है। इसके अभाव में जीवन का अर्थ और महत्व समाप्त हो सकता है। कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे का सम्मान तब तक नहीं कर सकता, जब तक वह स्वयं अपना और नजदीकी लोगों का सम्मान नहीं करता। छात्रों के बीच सम्मान जैसे नैतिक मूल्य को बढ़ावा देने के लिए 'मातृ–पितृ सम्मान' गतिविधि अत्यन्त लाभकारी है। इस गतिविधि में छात्रों के अभिभावकों को उनके विद्यालय में आमंत्रित करके, सम्मानित किया जाता है।

विद्यालय/कक्षा में संप्रयोगः इस गतिविधि से अभिभावकों की विद्यालय में अभिरूचि बढ़ती है। शिक्षकों, अभिभावकों के बीच सामंजस्य बेहतर होता है और विश्वास का रिश्ता प्रगाढ़ होता है।

योजनाः सभी छात्रों के अभिभावकों को एक ही दिन विद्यालय में आमंत्रित करना संभव नहीं है। इसलिए शिक्षक छात्रों के क्रमानुसार सप्ताह के किसी एक दिन, तय संख्या में अभिभावकों को विद्यालय में आमंत्रित कर सकते हैं।

विधिः अभिभावकों को आमंत्रित करने के लिए छात्र कला–शिल्प के द्वारा अपने–अपने अभिभावकों के लिए निमंत्रण पत्र भी बना सकते हैं। अभिभावकों का सम्मान करने के लिए छात्र कला–शिल्प से फूल या कोई अन्य भेंट सामाग्री इत्यादि भी बना सकते हैं।

क्रियान्वयनः शिक्षक छात्रों को सम्मान का महत्व समझाते हैं, और अपने माता–पिता का सम्मान करने की सीख देते हैं। शिक्षक आमंत्रित अभिभावकों को उनके बच्चे के हाथों द्वारा सम्मानित कराते हैं। शिक्षक अभिभावकों से अनुरोध करते हैं कि वह भी आयोजन और 'सम्मान' पर अपने विचार प्रस्तुत करें। उदाहरण के रूप में मातृ–पितृ पूजनोत्सव का आयोजित किया जा सकता है। इसके अंतर्गत–

- शिक्षक मातृ–पितृ पूजनोत्सव के महत्व के बारे में अभिभावकों तथा छात्रों को बताते हैं।
- बच्चे सजी हुई पूजन–थाली से मातृ–पितृ पूजा करते हैं और अभिभावकों के चरण धोकर, उनके माथे पर तिलक लगाकर फूलों से उनका अभिवादन करते हैं।
- इलायची दाना व मिश्री को प्रसाद के रूप में अभिभावकों को खिलाया जाता है।
- विद्यालय में अपने बच्चों से इस प्रकार का सम्मान पाकर अभिभावक अभिभूत हो जाते हैं और उनका शिक्षक और विद्यालय के प्रति लगाव और सम्मान बढ़ जाता है।

ध्यान दें: यह गतिविधि महीने के दूसरे शनिवार या फिर पी.टी.एम वाले दिन आयोजित की जा सकती है। छात्र इस अवसर पर अपने अभिभावकों के सम्मान में विभिन्न कार्यक्रम भी प्रस्तुत कर सकते हैं, जैसे कि पौराणिक कथा पर आधारित नाट्य मंचन, खेल प्रतियोगिता, अंताक्षरी प्रतियोगिता इत्यादि। ■